मई 2026, मूल्य : 40

पाखी

सृजन की उड़ान

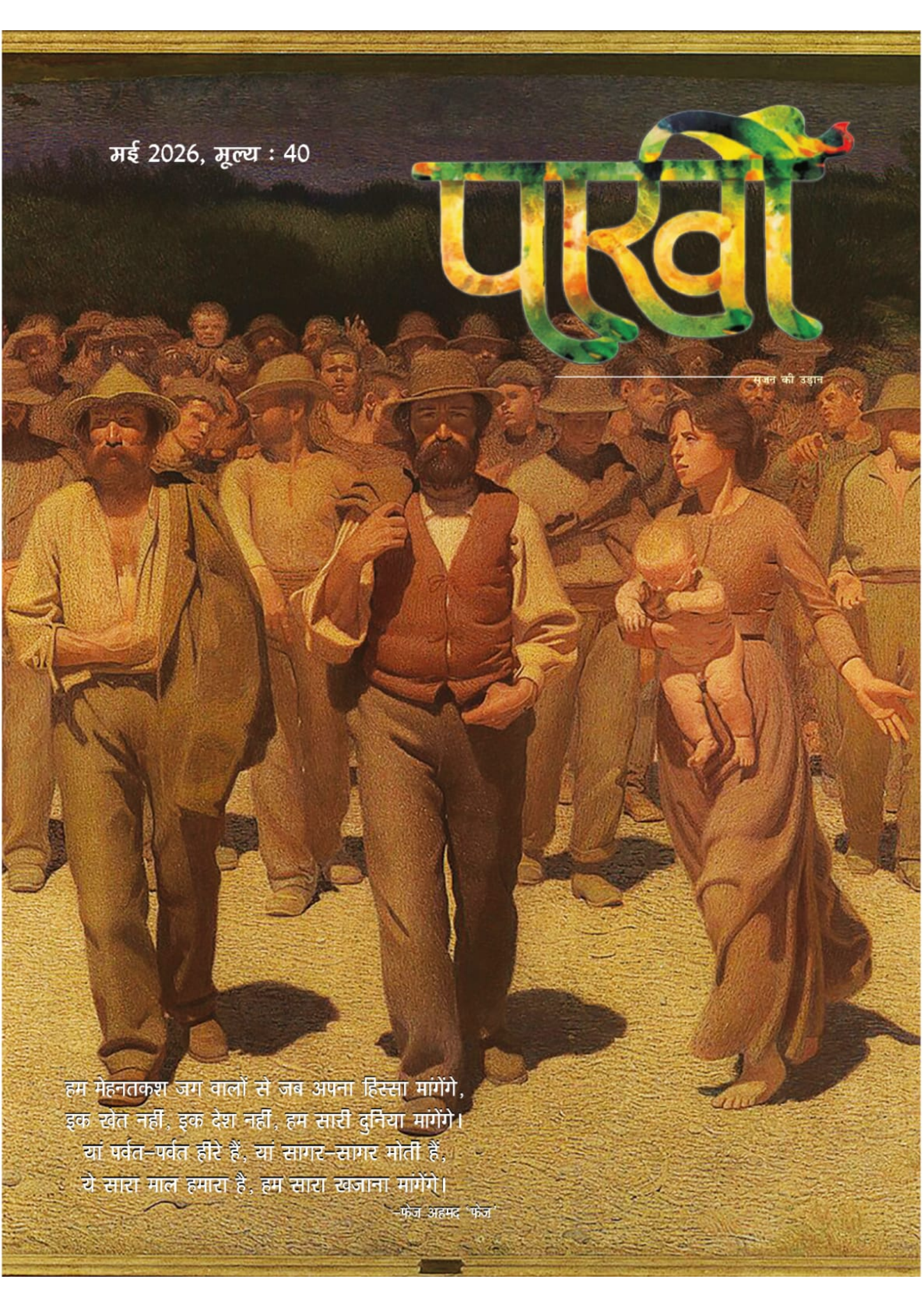

हम मेहनतकश जग वालों से जब अपना हिस्सा मांगेंगे,
इक खेत नहीं, इक देश नहीं, हम सारी दुनिया मांगेंगे।
यां पर्वत-पर्वत हीरे हैं, यां सागर-सागर मोती हैं,
ये सारा माल हमारा है, हम सारा खजाना मांगेंगे।

-फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

रेखाचित्र : शशिभूषण बडोनी, मार्टिन जॉन, आस्था एवं प्रेम साहिल

वर्ष : 18, अंक 8, मई, 2026

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

'The Fourth Estate' प्रसिद्ध चित्रकार ग्यूसेप पेलिज़ा दा वोलपिडो (Giuseppe Pellizza da Volpedo) की एक ऑयल पेंटिंग है, जिसका मूल शीर्षक The Path of Workers था और जिसे 1898 से 1901 के बीच बनाया गया। यह चित्र एक श्रमिक हड़ताल के दौरान के उस क्षण को दर्शाता है, जब मजदूरों के प्रतिनिधि शांत और आत्मविश्वास के साथ भीड़ से आगे बढ़ते हुए श्रमिकों के अधिकारों के लिए बातचीत करने निकलते हैं। यह पेंटिंग वर्तमान में Galleria d'Arte Moderna में संरक्षित है। पेलिज़ा की मृत्यु के बाद यह पेंटिंग इटली में समाजवादी प्रतीक के रूप में अत्यंत लोकप्रिय हो गई और व्यापक रूप से पुनरुत्पादित की गई, जबकि आरंभ में औपचारिक कला-जगत ने इसे विशेष महत्व नहीं दिया था। समय के साथ इसकी प्रतिष्ठा लगातार बढ़ती गई और अंततः इसे 20वीं सदी के आरंभ की सबसे महत्वपूर्ण इतालवी पेंटिंग्स में गिना जाने लगा।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

सुखों के ख्वाब क्या हुए? 4

चिट्ठी आई है 6

कहानियां/लघु कथाएं/अनूदित कहानी/व्यंग्य

जैसे कुछ हुआ ही नहीं	:	हरजेंद्र चौधरी	8
डिग्री का वजन	:	राजनारायण बोहरे	14
भूख *(लघु कथा)*	:	रेखा शाही	15
विक्षिप्त कौन?	:	अमृता पांडे	16
आखिरी साथी	:	सुकन्या शर्मा	20
सब के लिए *(लघु कथा)*	:	सुशांत सुप्रिय	23
ऊपरवाली	:	राजेंद्रप्रसाद निगम	24
अथ आलोचना कथा	:	दिलीप कुमार	28
निशान *(लघु कथा)*	:	प्रभाष पाठक	50
अंधकार में उजाला *(लघु कथा)*	:	अनुराधा प्रियदर्शिनी	54

कविताएं/ग़ज़लें/पद

डॉ. सुनीता की कविताएं 30

शिव कुमार यादव की कविताएं 32

सत्यनारायण स्नेही की कविताएं 34

नीरज नीर की कविताएं 36

शैलेंद्र चौहान की कविता 38

ऋचा भारद्वाज की कविताएं 40

अखिलेश श्रीवास्तव चमन कविताएं 42

महेश कुमार केशरी की कविताएं 44

मूल्यांकन

मंडलोई का रास्ता दूसरा है : जयप्रकाश मानस 45

मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों, पीड़ा और पुनर्जीवन की आकांक्षा का दस्तावेज : शैलेंद्र शरण 49

लीक से हटकर ग़ज़ल की नई राह : नीलोत्पल रमेश 51

श्रमिक स्त्री-जीवन की कहानियां : चैताली सिन्हा 55

कहानी और आलोचना का अंतर्संवाद : भालचंद्र जोशी 59

साक्षात्कार

इस शख्स ने 'धर्मयुग' को मुसलमान बना दिया : हारुन रशीद खान 62

संस्मरण

गांव की याद : राहुल राजेश 66

स्मृति-शेष

जाइए आप कहां जाएंगे... : नीलांशु रंजन 76

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

हे राम : दास्तान-ए-कत्ल-ए-गांधी : कृष्ण कल्पित 78

सत्याग्रह

स्मृति, इतिहास और प्रतिरोध को कुचलता यह समय : प्रियदर्शन 81

कथा-मीमांसा

मनुष्यता को पहचानने और बचाने का उद्यम : पंकज शर्मा 83
(उर्मिला शिरीष की कहानियां)

पाखी संवाद–जहां शब्द डरते नहीं/प्रतिक्रियाएं

जनपक्षधरता के कवि 87
मानवीय आदर्शों के रचनाकार 88
गगन है, मुक्त पवन है 89
सफ़दर हाशमी और सड़क पर उतरती संस्कृति का प्रतिरोध 90
सैमुअल बेकेट और अस्तित्व की अंतिम स्थितियां 92
भीमराव आंबेडकर और असहमति का साहस 93
हसरत जयपुरी और गीतों में बसी मोहब्बत 94
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और खड़ी बोली की काव्य-प्रतिष्ठा 95

सुखों के ख्वाब क्या हुए?

तसल्लियों के इतने साल बाद अपने हाल पर
निगाह डाल सोच और सोच कर सवाल कर
किधर गए वो वायदे सुखों के ख़्वाब क्या हुए
तुझे था जिनका इंतज़ार
वो जवाब क्या हुए
तू इनकी झूठी बात पर
ना और ऐतबार कर
के तुझको सांस-सांस का सही हिसाब चाहिए
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए
नफ़स-नफ़स क़दम-क़दम बस एक फ़िक्र दम-ब-दम
घिरे हैं हम सवाल से, हमें जवाब चाहिए
जहां अवाम के ख़िलाफ साज़िशें हों शान से
जहां पे बेगुनाह हाथ धो रहे हों जान से
वहां न चुप रहेंगे हम, कहेंगे हां कहेंगे हम
हमारा हक़ हमारा हक़ हमें जनाब चाहिए

–शलभ श्रीराम सिंह

भारत के आर्थिक परिदृश्य पर आई 'Wealth Tracker India 2026' रिपोर्ट ने एक बार फिर उस असहज सच को सामने रख दिया है जिसे हम अक्सर नजरअंदाज करते हैं। देश में अमीरी और गरीबी के बीच की खाई तेजी से चौड़ी होती जा रही है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के शीर्ष 5 सबसे अमीर परिवारों की संपत्ति 2019 से 2025 के बीच महज 6 वर्षों में लगभग 400 प्रतिशत तक बढ़ गई। यह आंकड़ा सिर्फ आर्थिक सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि उस असंतुलन का प्रतीक है जो भारतीय समाज की बुनियाद को चुनौती दे रहा है।

हमारा संविधान मुल्क को एक 'समाजवादी' राज्य घोषित करता है। जहां संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण हो, अवसरों की समानता हो और हर नागरिक को सम्मानजनक जीवन का अधिकार मिले। लेकिन जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल उलट तस्वीर पेश करती है। आज देश में संपत्ति का बड़ा हिस्सा मुट्ठी भर लोगों के हाथों में सिमटता जा रहा है, जबकि विशाल आबादी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष कर रही है।

रिपोर्ट के अनुसार, देश के 1688 सबसे अमीर लोगों की कुल संपत्ति 166 लाख करोड़ रुपए से अधिक हो चुकी है, जो भारत की कुल जीडीपी का लगभग आधा है। वहीं दूसरी ओर, देश की निचली 50 प्रतिशत आबादी के पास मात्र 6.4 प्रतिशत संपत्ति है। यह आंकड़ा किसी भी लोकतांत्रिक समाज के लिए चिंता का विषय है।

अर्थशास्त्र में 'Have and Have Nots' की थ्योरी बताती है कि समाज दो हिस्सों में बंट जाता है, एक वह जो संसाधनों का मालिक है और दूसरा वह जो उनसे वंचित है। आज भारत इसी विभाजन की ओर तेजी से बढ़ता दिख रहा है। मुकेश अंबानी की संपत्ति में 153% की वृद्धि और गौतम अडानी की संपत्ति में 625% की बढ़ोतरी इस असमानता का सबसे बड़ा उदाहरण है। ये आंकड़े सिर्फ व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि उस आर्थिक ढांचे की ओर इशारा करते हैं जिसमें पूंजी का संकेंद्रण लगातार बढ़ रहा है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी के अनुसार 'जब पूंजी पर रिटर्न, आर्थिक विकास से ज्यादा होता है, तो असमानता बढ़ना तय है।' भारत में यही हो रहा है, पूंजी तेजी से पूंजी पैदा कर रही है, लेकिन श्रम और आम नागरिक उसी गति से आगे नहीं बढ़ पा रहे।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय' की बात करती है। लेकिन जब 1% आबादी के पास 40% संपत्ति हो और आधी आबादी के पास मुश्किल से 6% तो यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या हम उस आदर्श से भटक नहीं गए? डॉ. भीमराव आंबेडकर ने संविधान निर्माण के समय चेतावनी दी थी कि 'राजनीतिक समानता का कोई मतलब नहीं होगा, यदि सामाजिक और आर्थिक असमानता बनी रहती है।' आज यह चेतावनी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखती है।

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि यदि अमीरों पर 2% से 6% तक वेल्थ टैक्स और एक-तिहाई इनहेरिटेंस टैक्स लगाया जाए, तो हर साल 10.6 लाख करोड़ रुपए जुटाए जा सकते हैं। यह राशि स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा के लिए गेम-चेंजर साबित हो सकती है। लेकिन सवाल यह है कि क्या सरकार इस दिशा में कदम उठाएगी? रिपोर्ट यह भी बताती है कि पिछले 11 वर्षों में लगभग 19.6 लाख करोड़ रुपए के कॉर्पोरेट लोन माफ किए गए हैं। ऐसे में यह बहस